गांव मेघसर तहसील व जिला चूरू इतिहास के झरोखे से

मेघसर (तहसील व जिला चूरू) गांव को श्री मेघाराम चाहर गोत्र के जाट ने अपने नाम से संवत् 1300 में बसाया था। लगभग साढ़े सात सौ साल के पुराने इतिहास में इस गांव की कई करूण कहानियां सिमटी हुई है। आजादी से पूर्व तथा आजादी के बाद भी कुछ वर्षों तक जागीरदारों की हेकड़ी, शोषण और प्रताड़ना से त्रस्त इस गांव के पुरखों की दमन और उत्पीड़न से संबंधित अनेक करूण कहानियां इस गांव के इतिहास में समाहित हैं।

मेघाराम चाहर के नाम से बसे इस मेघसर गांव में प्रारम्भ में ब्राह्मण जाति के काफी घर थे। काफी समय तक जाट एवं गांव की उत्तर दिशा में एक जाल के पेड़ के पास स्थित कुंआ जो कि 'जाल का कुंआ' नाम से जाना जाता था। उसका निर्माण भी ब्राह्मणों द्वारा करवाया बताया जाता है। इस पुराने कुए के चौड़ी शिलाओं जैसे चूने के पत्थर अब भी कई जगह विद्यमान हैं।

मेघसर गांव जागीरी प्रथा के अनुसार देपालसर पट्टे के अधीनस्थ रहा। बाद में इस गांव में बणीरोत राजपूत आकर बस गए तथा उनके द्वारा राजस्व वसूली का कार्य किया जाता रहा। जागीरदारों की राजस्व वसूली की निर्मम प्रणाली और कई प्रकार की लाग–बागों से तंग आकर ब्राह्मण जाति के सब लोग इस गांव को छोड़कर इधर–उधर के कस्बों में जाकर बस गए। ब्राह्मणों के घर गांव के बीच स्थित गढ़ के दक्षिण में तथा गांव की दक्षिण दिशा में स्थित सार्वजनिक कुंए व स्कूल के पीछे के खेड़े में स्थित थे जिनके ध्वस्त होने के बाद वहां पर दूसरी जाति के घर आबाद हो चुके हैं।

गांव के आस–पास के खेड़ों में स्थित बड़े खेजड़े के पेड़ विभिन्न देवी–देवताओं के नाम से जाने जाते थे। ये सब प्राचीन सभ्यता, संस्कृति एवं प्रथाओं तथा परम्पराओं का मूक इतिहस दर्शाते रहे हैं। ये पेड़ अब खेड़ों के मालिकों ने काटकर वहां पर घर बन चुके हैं।

गांव के उत्तर दिशा में रेत का एक ऊंचा टीब्बा है जिसे 'चिलका भर' के नाम से जाना जाता है। कहते हैं कि पिण्डारी या लूटेरे जब गांव को कहीं से लूटने के लिए आ जाते तो इस टीले पर चढ़कर लोग एक कांच का चिलका या संकेत देकर गांव की बुर्ज में सुरक्षा के लिए तैयार हो जाने का संकेत देते थे। इसी प्रकार गांव के पश्चिम दिशा में लोकदेवता रामदेव जी महाराज का टीला या भर है तथा गांव के उत्तर में गोगाजी महाराज की मेड़ी स्थित है जिसके नीचे तीन बीघा भूमि छोड़ी हुई है।

सहनाली गांव की तरफ जाने वाले रास्ते पर स्थित कुंए का निर्माण रतननगर के केडिया परिवार द्वारा करवाया गया। कालांतर में इस कुवे का पानी खारा होता चला गया। वर्तमान में इस कुवे के पास की जमीन पर अतिक्रमण हो चुका है। गांव की दक्षिण दिशा में स्थित कुवे का निर्माण कुरड़ी कूट सेठ रामगढ़वासी ने करवाया जिससे गांव के अधिकांश हिस्से को पानी की आपूर्ति अब भी होती है। आजादी के बाद के वर्षों में गांव की पश्चिम दिशा में स्थित कुवे का निर्माण दलित बस्ती में रहने वाले परिवारों की सुविधा के लिए करवाया गया। गांव के दक्षिण दिशा में स्थित पक्के जोहड़े का निर्माण रामगढ़ के सेठों ने करवाया। वर्तमान में इस जोहड़े के चारों ओर की पशु चारागाह की भूमि पर आबादी बस चुकी है। जोहड़े का स्वरूप विद्रुप हो चुका है।

गांव के मध्य में गढ़ से सटा हुआ एक बुर्ज भी सुरक्षा की दृष्टि से बना हुआ था जो कि वर्तमान में जीर्ण–शीर्ण अवस्था में विद्यमान है। गांव में मुख्य गढ़ ठा. खुशाल सिंह ने संवत 1990 से 2000 के बीच निर्माण करवाया। पुराने समय से गांव में ठाकुर जी का एक मंदिर बना हुआ है जिसमें पूजा अर्चना स्वामी जाति का परिवार करता है।

गांव में सरकारी प्राथमिक स्कूल की स्थापना 1955 में हुई। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में गांव में खास तौर से शिक्षा के प्रति जागृति उत्पन्न हुई और जिसके फलस्वरूप मेघसर के तथा निकटवृति पूनियां की ढ़ाणी के अनेक बच्चों ने गांव की इस प्राथमिक स्कूल से परीक्षा उत्तीण कर सैकण्डरी कक्षा तक का अध्ययन निकटवर्ती रतननगर कस्बे में स्थित राजकीय हाई स्कूल में किया। शिक्षा और सरकारी सेवा के क्षेत्र में इस गांव ने अपनी विशिष्ट पहचान अर्जित की है।

गांव का पहला शिक्षक बनने का सौभाग्य श्री भैराराम ईसराण को मिला जिन्होंने 1958 में रतननगर से हाई स्कूल परीक्षा पास कर 1 जुलाई 1958 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय रामसरातात (राजगढ़) में कार्यभार ग्रहण किया। इनके बाद उसी दौर में गांव से दूसरे शिक्षक बनने का श्रेय श्री रामकुमार सिंह रणवा को जाता है। वे भी अध्यापक पद पर नियुक्त हुए तथा कालांतर में राजकीय सैकण्डरी स्कूल, रतननगर में कार्यरत रहते हुए स्वैच्छिक सेवानिवृति ली और सरपंच पद का चुनाव लड़ा। बाद में पांच साल तक देपालसर पंचायत के सरपंच रहे। श्री भैराराम ईसराण को गांव का पहला शिक्षक, पहला स्नातक, पहला अधिस्नातक एवं सेवानिवृत्ति के बाद पहला अभिभाषक व नोटेरी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री भैराराम ईसराण 31 जुलाई 1994 को प्रध्यापक हिन्दी (स्कूल शिक्षा) पद से सेवानिवृत हुए। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मेघसर गांव का दबदबा रहा है। गांव के शिक्षित युवाओं ने विभिन्न सरकारी पदों पर आसीन होकर गांव का नाम रोशन किया है।